

योएल की पुस्तक और लाओदीकियाई सप्तम-दिवसीय एडवेंटिस्ट कलीसिया - संख्या अड़तीस

Jeff Pippenger

2026-01-30

संख्या अड़तीस

स्वर्ग की रोटी की परीक्षा, यीशु के दिनों में, शिष्यत्व की ओमेगा-परीक्षा थी, और प्राचीन इस्राएल के वाचा-इतिहास के अल्फा में निरूपित मन्ना-परीक्षा के संदर्भ में भी वह ओमेगा थी। आरंभ मन्ना था; अंत स्वर्ग की रोटी थी। ओमेगा सदैव सबसे बड़ा होता है; इसलिए शिष्यों के सबसे बड़े परित्याग के कारण कफ़रनहूम मसीह के इतिहास तथा शिष्यत्व की परीक्षा में ओमेगा के रूप में चिह्नित होता है।

तब यीशु ने अपने चेलों से कहा, यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो वह स्वयं का इंकार करे, अपना क्रूस उठाए, और मेरा अनुसरण करे। क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहेगा, वह उसे खो देगा; और जो कोई मेरे कारण अपना प्राण खो देगा, वह उसे पाएगा। क्योंकि यदि मनुष्य सम्पूर्ण संसार को प्राप्त करे, और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ? या मनुष्य अपने प्राण के बदले क्या देगा? क्योंकि मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों के साथ अपने पिता की महिमा में आएगा; और तब वह हर एक को उसके कार्यों के अनुसार प्रतिफल देगा। मैं तुम से सत्य कहता हूँ, यहाँ खड़े कुछ ऐसे हैं, जो जब तक मनुष्य के पुत्र को उसके राज्य में आते हुए न देख लें, मृत्यु का स्वाद न चखेंगे। मत्ती 16:24-28.

कफ़रनहूम एक ओमेगा-परीक्षा है। कफ़रनहूम की परीक्षा, दस कुँवारियों के दृष्टान्त में तेल की परीक्षा है; जो आधी रात की पुकार से प्रारम्भ होती है और ऐसे काल का उद्घाटन करती है जिसमें मूर्ख कुँवारियाँ यह पहचानती हैं कि उनके पास तेल नहीं है। तब जब वे रविवार के क़ानून के बंद होते द्वार के निकट आती हैं, वे घबराने लगती हैं, जैसा कि यूहन्ना 6:66 में कफ़रनहूम के संकट में दर्शाया गया है। भविष्यवाणी की दृष्टि से वे 'लज्जित' हैं।

देखो, परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है, वे दिन आते हैं कि मैं देश में अकाल भेजूँगा—न रोटी का अकाल, और न पानी की प्यास, परन्तु यहोवा के वचनों के सुनने का अकाल। और वे समुद्र से समुद्र तक, और उत्तर से लेकर पूर्व तक मारे-मारे फिरेंगे; वे यहोवा के वचन को ढूँढ़ने के लिये इधर-उधर दौड़ेंगे, परन्तु उसे न पाएँगे। उस दिन सुन्दर कुँवारियाँ और जवान पुरुष प्यास के कारण मूर्छित हो जाएँगे। जो सामरिया के पाप की शपथ खाकर कहते हैं, हे दान, तेरा देवता जीवित है; और, बेशेबा की रीति जीवित है; वे भी गिर पड़ेंगे, और फिर कभी न उठेंगे। आमोस 8:11-14।

कफ़रनहूम की ओमेगा परीक्षा, 2024 की आधारभूत परीक्षा के पश्चात आने वाली ओमेगा परीक्षा का आदिरूप है। ओमेगा परीक्षा वह समय है जिसमें दुल्हन पर रविवार के क़ानून से पहले ही मुहर लगा दी जाती है। इसी में यह विभाजन सदा के लिए अन्तिम रूप से स्थिर हो जाता है, क्योंकि एक बार जब वह शुद्ध हो जाती है, तब यरूशलेम के भीतर से कोई परदेसी (अन्यजाति) फिर कभी नहीं चलेगा—युगानुयुग।

यहोवा सिय्योन से भी गरजेगा, और यरूशलेम से अपना स्वर सुनाएगा; और आकाश और पृथ्वी काँप उठेंगे; परन्तु यहोवा अपनी प्रजा की आशा और इस्राएल की सन्तान का बल होगा। तब तुम जानोगे कि मैं, तुम्हारा परमेश्वर यहोवा, सिय्योन, अपने पवित्र पर्वत में निवास करता हूँ; तब यरूशलेम पवित्र ठहरेगा, और फिर कोई परदेसी उसके भीतर से नहीं गुज़रेगा।

और उस दिन ऐसा होगा कि पर्वतों से नया दाखरस टपकेगा, और पहाड़ियाँ दूध से बहेंगी, और यहूदा की सब नदियाँ जल से भरकर बहेंगी; और यहोवा के भवन से एक सोता फूट निकलेगा, जो शिक्तीम की घाटी को सींचेगा।

मिस्र उजाड़ हो जाएगा, और एदोम उजाड़ वनप्रदेश बन जाएगा, यहूदा की सन्तान के विरुद्ध की गई हिंसा के कारण, क्योंकि उन्होंने अपनी भूमि में निर्दोषों का रक्त बहाया है। परन्तु यहूदा सदा सर्वदा बसा रहेगा, और यरूशलेम पीढ़ी से पीढ़ी तक बना रहेगा। क्योंकि उनके रक्त को, जिसे मैंने शुद्ध नहीं किया था, मैं शुद्ध करूँगा; क्योंकि प्रभु सिय्योन में वास करता है। योएल 3:16-21.

अन्वेषण न्याय के अंतिम चरणों में यरूशलेम को पाप से शुद्ध किया जाता है; और जकर्याह के तीसरे अध्याय में यही वह स्थान है जहाँ मैला लाओदीकियाई वस्त्र के स्थान पर यहोशू को श्वेत सूक्ष्म सन का फिलाडेल्फियाई वस्त्र दिया जाता है। "तब यरूशलेम पवित्र होगी, और फिर पराए उसके भीतर से नहीं गुजरेंगे," क्योंकि गेहूँ को कुनैल से अलग कर प्रथम-फल की भेंट के रूप में एकत्र किया गया है। यह ओमेगा-परीक्षा में घटित होता है, और यह तब होता है जब आकाश के झरोखे खोले जाते हैं, और यीशु रत्नों को रत्न-पेटिका में डालते हैं और संसार से कहते हैं, "आओ और देखो।" "आओ और देखो" मेरे राज्य का ध्वज-चिह्न, मेरी वधू, मेरे लेवियों की भेंट, जैसे प्राचीन दिनों में थी। "आओ और देखो" मेरा मन्दिर, मेरी रत्न-पेटिका जो रत्नों से परिपूर्ण है—प्रत्येक रत्न महिमा के राज्य के मुकुट का एक अंग बनने के लिए तैयार किया गया है।

2024 की आधारभूत अल्फ़ा परीक्षा, मंदिर की ओमेगा परीक्षा तक ले जाती है। ओमेगा परीक्षा तब घटित होती है जब आकाश के झरोखे खुलते हैं, अर्थात् जब दुल्हन स्वयं को तैयार करती है। मूर्ख कुँवारियाँ और उनका झूठा शान्ति और सुरक्षा का पश्चात्-वर्षा सन्देश, पवन द्वारा खुले झरोखों से बाहर उड़ा दिए जाते हैं, क्योंकि इस इतिहास का सन्देश पूर्वी पवन का सन्देश है। यह सन्देश यशायाह की कठोर पवन है, जो पूर्वी पवन के दिन रोक दी जाती है; यह यूहन्ना की चार पवनें हैं, जो एक लाख चवालीस हज़ार की मुहरबंदी के समय रोक ली जाती हैं।

"स्वर्गदूत चारों पवनों को थामे हुए हैं, जिन्हें एक क्रोधित घोड़े के रूप में दर्शाया गया है, जो छूटकर निकल भागने और सारी पृथ्वी के मुख पर दौड़ पड़ने को उद्यत है, और अपने मार्ग में विनाश तथा मृत्यु ले जाता है।

"क्या हम शाश्वत जगत की ठीक दहलीज़ पर सोए रहें? क्या हम निष्क्रिय, ठंडे और निर्जीव बने रहें? काश हमारी कलीसियाओं में परमेश्वर की आत्मा और श्वास उसकी प्रजा में फूँकी जाए, ताकि वे अपने पैरों पर खड़े हों और जीवित हो जाएँ।" पांडुलिपि प्रकाशन, खंड 20, 217.

जो लोग इस्लाम की पूर्वी पवन के उस संदेश को अस्वीकार करते हैं, उन्हें वही पवन—जो उनके विद्रोह का प्रतीक है—खिड़की से बाहर उड़ा देती है। जिन मूर्खों के पास तेल नहीं है, उनके वर्ग से भ्रांति का मलबा सर्वदा चिपका रहता है। इफ़्रैम फिर अपनी मूर्तियों से जा मिला है। उन्होंने मुहरबंदी के समय के ज्ञान में हुई वृद्धि, और तीसरे हाथ से संबंधित इस्लाम के साथ उसके संबंध—इन दोनों को अस्वीकार कर दिया। परमेश्वर उनके नकली परवर्ती वर्षा के संदेश की महिमा को "लज्जा" में बदल देगा।

मेरी प्रजा ज्ञान के अभाव से नाश हो रही है; क्योंकि तू ने ज्ञान को अस्वीकार किया है, इसलिए मैं भी तुझे अस्वीकार करूँगा, कि तू मेरे लिए याजक न रहेगा; चूँकि तू ने अपने परमेश्वर की व्यवस्था को भुला दिया है, इस कारण मैं भी तेरी संतानों को भूल जाऊँगा।

जितना वे बढ़े, उतना ही उन्होंने मेरे विरुद्ध पाप किया; इसलिए मैं उनकी महिमा को लज्जा में बदल दूँगा। वे मेरे लोगों के पाप का भक्षण करते हैं, और उनके अधर्म पर अपना मन लगाए रहते हैं। और यह होगा: जैसी प्रजा, वैसा याजक; और मैं उनके मार्गों के कारण उन्हें दंड दूँगा, और उनके कृत्यों के अनुसार उन्हें प्रतिफल दूँगा। क्योंकि वे खाएँगे, परन्तु तृप्त न होंगे; वे व्यभिचार करेंगे, परन्तु बढ़ेंगे नहीं; क्योंकि उन्होंने प्रभु की ओर ध्यान देना छोड़ दिया है। व्यभिचार, और दाखमदिरा, और नयी दाखमदिरा, हृदय को छीन लेती हैं। मेरे लोग अपने काष्ठ से परामर्श माँगते हैं, और उनकी लाठी उन्हें बताती है; क्योंकि व्यभिचार की आत्मा ने उन्हें भटका दिया है, और वे अपने परमेश्वर के अधीन से निकलकर व्यभिचार में चले गए हैं। वे पर्वतों के शिखरों पर बलि चढ़ाते हैं, और पहाड़ियों पर धूप जलाते हैं, बलूत, पोपलर और एल्म के वृक्षों के नीचे, क्योंकि उनकी छाया अच्छी होती है; इसलिए तुम्हारी बेटियाँ व्यभिचार करेंगी, और तुम्हारी बहएँ पर-पुरुषगमन करेंगी। जब तुम्हारी बेटियाँ व्यभिचार

करेंगी, तब मैं उन्हें दंड न दूँगा, न ही तुम्हारी बहुओं को जब वे पर-पुरुषगमन करेंगी; क्योंकि वे स्वयं वेश्याओं के साथ अलग होकर रहते हैं, और वेश्याओं के साथ बलि चढ़ाते हैं; इसलिए जो लोग समझ नहीं रखते, वे गिर पड़ेंगे।

यद्यपि तू, हे इस्राएल, व्यभिचार करता है, तथापि यहूदा अपराध न करे; और तुम लोग गिलगाल मत आओ, न बेत-आवन पर ऊपर चढ़ो, और न यह शपथ खाओ, 'यहोवा जीवित है।' क्योंकि इस्राएल पीछे हटनेवाली बछिया के समान पीछे हटता है; अब यहोवा उन्हें विस्तृत स्थान में मेम्ने के समान चराएगा।

इफ्राइम मूर्तियों से जुड़ा हुआ है: उसे उसके हाल पर छोड़ दो।

उनका पेय खट्टा है: उन्होंने निरन्तर व्यभिचार किया है: उसके शासक लज्जा से प्रेम करते हैं, 'दो, दो'। वायु ने उसे अपने पंखों में बाँध लिया है, और वे अपने बलिदानों के कारण लज्जित होंगे। होशे 4:6-19.

जो अपशिष्ट हटाया जाता है, उसमें मूर्ख कुँवारियाँ भी हैं और उनके वे त्रुटिपूर्ण सिद्धांत भी जिनसे वे संयुक्त हैं। हम वही होते हैं जो हम खाते हैं, और उन्होंने पूर्वी हवा के संदेश को अस्वीकार कर दिया, उसके स्थान पर उस झूठ को चुन लिया जो अपने साथ बलवान भ्रम लाता है, और वे अपने कृत्रिम 'शान्ति और सुरक्षा' की अन्तिम वर्षा के संदेश से संयुक्त हो गईं। योएल का नया दाखरस उनके मुख से काट दिया गया है, ठीक वही जहाँ यिर्मयाह परमेश्वर का मुख बनता है।

"सत्य को अस्वीकार करते समय मनुष्य उसके रचयिता को ही अस्वीकार करते हैं। परमेश्वर की व्यवस्था को पददलित करते हुए वे व्यवस्थादाता के अधिकार को नकारते हैं। झूठी शिक्षाओं और सिद्धांतों की मूर्ति बनाना उतना ही सरल है जितना लकड़ी या पत्थर की मूर्ति गढ़ना। परमेश्वर के गुणों का गलत निरूपण करके शैतान मनुष्यों को उसे मिथ्या स्वरूप में समझने को प्रवृत्त करता है। अनेकों के लिए यहोवा के स्थान पर एक दार्शनिक मूर्ति सिंहासन पर विराजमान है; जबकि जीवित परमेश्वर, जैसा कि वह अपने वचन में, मसीह में, और सृष्टि के कार्यों में प्रकट हुआ है, उसकी आराधना बहुत कम लोग करते हैं। हजारों प्रकृति को देवत्व प्रदान करते हैं, परन्तु प्रकृति के परमेश्वर को नकार देते हैं। यद्यपि भिन्न रूप में, आज मसीही जगत में मूर्तिपूजा उतनी ही वास्तविकता से विद्यमान है जितनी एलिय्याह के दिनों में प्राचीन इस्राएल में थी। अनेक कथित बुद्धिमान पुरुषों, दार्शनिकों, कवियों, राजनीतिज्ञों, पत्रकारों का देवता—परिष्कृत फैशनेबल मंडलियों का देवता, अनेक महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों का, यहाँ तक कि कुछ धर्मशास्त्रीय संस्थानों का भी—फोनीशिया के सूर्य-देवता बाल से कुछ ही बेहतर है।" *The Great Controversy*, 583.

मिलर के स्वप्न में सच्चे और झूठे के पृथक्करण के समय, पवन झूठी कुँवारियों को बाहर ले जाता है, जबकि प्रभु खुली खिड़की की ओमेगा आंतरिक परीक्षा के दौरान अपनी दुल्हन को मुहरबंद करता है।

देखो, मैं अपने दूत को भेजूँगा, और वह मेरे आगे मार्ग तैयार करेगा; और प्रभु, जिसे तुम खोजते हो, अचानक अपने मन्दिर में आएगा, अर्थात् वाचा का दूत, जिससे तुम प्रसन्न होते हो; देखो, वह आएगा, सेनाओं का यहोवा कहता है। परन्तु उसके आने के दिन को कौन सह सकेगा? और जब वह प्रकट होगा तब कौन ठहर सकेगा? क्योंकि वह कसौटी परखनेवाले की आग के समान, और धोबियों के साबुन के समान है; और वह चाँदी को गलानेवाले और शुद्ध करनेवाले के समान बैठ जाएगा; और वह लेवी की सन्तानों को शुद्ध करेगा, और उन्हें सोने और चाँदी के समान निर्मल करेगा, ताकि वे यहोवा के लिये धर्म से भेंट चढ़ाएँ। तब यहूदा और यरूशलेम की भेंट यहोवा को प्रिय लगेगी, जैसे प्राचीन दिनों में, और जैसे पूर्वकाल के वर्षों में लगती थी। मलाकी 3:1-4।

लेवी के पुत्र उन लेवियों के पुत्र हैं, जो हारून की पशु की मूर्ति की परीक्षा के समय, और फिर यरोबाम की पशु की मूर्ति की परीक्षा के समय भी, विश्वासयोग्य रहे। वे वही हैं जो पशु की मूर्ति की परीक्षा में उत्तीर्ण होते हैं—वह परीक्षा जिसके द्वारा उनकी अनन्त नियति निर्णीत होती है, और वह परीक्षा जिसे उन्हें, इससे पहले कि हम मुहरबंद किए जाएँ, अवश्य उत्तीर्ण करना है।

प्रभु ने मुझे स्पष्ट रूप से दिखाया है कि अनुग्रहकाल के समाप्त होने से पहले पशु की प्रतिमा बनाई जाएगी; क्योंकि वह परमेश्वर की प्रजा के लिए महान परीक्षा होगी, जिसके द्वारा उनका अनन्त भाग्य निर्धारित होगा।

यह वह परीक्षा है जिससे परमेश्वर की प्रजा को मुहर लगाए जाने से पहले होकर गुजरना होगा। जो सभी उसकी व्यवस्था का पालन करके और मिथ्या सब्त को स्वीकार करने से इंकार करके परमेश्वर के प्रति अपनी निष्ठा सिद्ध करेंगे, वे प्रभु परमेश्वर यहोवा के ध्वज के नीचे पंक्तिबद्ध होंगे और जीवित परमेश्वर की मुहर प्राप्त करेंगे। जो स्वर्गीय मूल की सच्चाई को त्याग देंगे और रविवार का सब्त स्वीकार करेंगे, वे पशु का चिन्ह प्राप्त करेंगे। सेवंथ-डे एडवेंटिस्ट बाइबल कमेंटरी, खंड 7, 976।

पशु की प्रतिमा की परीक्षा, रविवार के कानून के समय होने वाली पशु के चिह्न की परीक्षा से पूर्व की परीक्षा है, और उसे द्वार बंद होने से पहले उत्तीर्ण करना अनिवार्य है।

यह वह परीक्षा है जो धर्मियों को शुद्ध करती है और साथ ही धर्मियों को अधर्मियों से पृथक् करती है। यह वह परीक्षा है जहाँ दानिय्येल, शद्रक, मेशक और अबेदनगो, बाबुल के आहार का सेवन करने वालों की अपेक्षा, रूप से सुन्दरतर और मांस में पुष्टतर पाए गए। एक वर्ग ने स्वर्ग की रोटी खाई थी और दूसरे ने बाबुल की रोटी। यह कफरनहूम के आराधनालय में रोटी की परीक्षा है।

बाह्य दृष्टि से, जिस परीक्षा-काल में हम अभी हैं, वह पशु की प्रतिमा की परीक्षा है, अर्थात् संयुक्त राज्य अमेरिका में कलीसिया और राज्य का संयोजन। उसके समानांतर आंतरिक परीक्षा-काल कुँवारियों के एक वर्ग की पहचान करता है जो मानवता का प्रतिरूप प्रकट करती हैं, और कुँवारियों के दूसरे वर्ग की जो दिव्यता और मानवता के संयुक्त प्रतिरूप को प्रकट करती हैं। मलाकी द्वारा लेवियों के शुद्धीकरण और परिष्करण को निर्दिष्ट करने के पश्चात, परमेश्वर एक परीक्षा प्रस्तावित करता है।

और मैं न्याय करने को तुम्हारे निकट आऊँगा; और मैं जादू-टोना करने वालों के विरुद्ध, व्यभिचारियों के विरुद्ध, और झूठी शपथ खाने वालों के विरुद्ध एक शीघ्र साक्षी ठहरूँगा, तथा उनके विरुद्ध भी जो भाड़े के मज़दूर को उसकी मज़दूरी में दबाते हैं, और विधवा व अनाथ पर अत्याचार करते हैं, और परदेसी को उसके अधिकार से वंचित करते हैं, और जो मुझसे नहीं डरते—यहोवा सेनाओं का यह वचन है।

क्योंकि मैं यहोवा हूँ, मैं परिवर्तित नहीं होता; इसलिए हे याकूब की सन्तान, तुम नाश नहीं हुए। मलाकी 3:5, 6.

पहली परीक्षा परमेश्वर का भय मानना है, और जो वर्ग वाचा के दूत द्वारा ली गई परीक्षा में असफल हुआ, उन पर तब पाँच धिक्कार सुनाए जाते हैं—पाँच मूर्ख कुँवारियों में से प्रत्येक के लिये एक—जो दीनता, दयनीयता, दरिद्रता, अन्धता और नग्नता के अनुरूप हैं; पाँच मूर्ख कुँवारियों के लिये पाँच भविष्यसूचक विशेषताएँ, जो "और मुझ से न डरना" इस वाक्य के अंतर्गत संक्षेपित हैं। ये वे हैं जो आधारभूत प्रथम अल्फ़ा परीक्षा में असफल हुए। वे इसलिए असफल हुए क्योंकि उन्होंने यह नहीं समझा कि परमेश्वर कभी नहीं बदलता। ये वही हैं जो 2024 की आधारभूत बाह्य अल्फ़ा परीक्षा में असफल हुए।

अतीत के इतिहास से सीखें मिलती हैं; और इन पर ध्यान दिलाया जाता है, ताकि सब समझ लें कि परमेश्वर आज भी उसी रीति से कार्य करता है, जिस रीति से वह सदैव करता आया है। उसके कार्य में और राष्ट्रों के बीच उसका हाथ आज भी ठीक वैसे ही दिखाई देता है, जैसा कि तब से दिखाई देता आया है जब एदन में आदम को पहली बार सुसमाचार घोषित किया गया था।

ऐसे काल आते हैं जो राष्ट्रों और कलीसिया के इतिहास में निर्णायक मोड़ सिद्ध होते हैं। ईश्वरीय प्रबंध में, जब ये विभिन्न संकट आते हैं, तब उस समय के लिए प्रकाश दिया जाता है। यदि उसे ग्रहण किया जाता है, तो आध्यात्मिक उन्नति होती है; यदि उसे अस्वीकार किया जाता है, तो आध्यात्मिक अवनति और जहाज़ के डूब जाने जैसी तबाही आती है। प्रभु ने अपने वचन में सुसमाचार के आक्रामक कार्य को प्रकट किया है—जैसा कि वह अतीत में संचालित हुआ है, और भविष्य में भी होगा—यहाँ तक कि अंतिम संघर्ष तक, जब शैतानी शक्तियाँ

अपना अंतिम अद्भुत कदम उठाएँगी। Bible Echo, 26 अगस्त, 1895.

लाओदीकियों को यह नहीं दिखता कि मनुष्यों के साथ परमेश्वर का व्यवहार सदैव एक-सा रहता है। यदि ज्योति अथवा तेल ग्रहण किया जाए, तो आशीष होती है; यदि नहीं, तो जहाज़-भंग होता है।

प्राचीन युगों में स्वर्ग के प्रभु परमेश्वर ने अपने भेद अपने भविष्यद्वक्ताओं को प्रकट किए। वर्तमान और भविष्य उसे समान रूप से स्पष्ट हैं। परमेश्वर की वाणी युगानुयुग गूँजती है, मनुष्य को बताती है कि क्या घटित होने वाला है। राजा और राजकुमार अपने नियत समय पर अपने-अपने स्थान ग्रहण करते हैं। वे सोचते हैं कि वे अपनी ही योजनाएँ पूरी कर रहे हैं, परन्तु वस्तुतः वे उस वचन को पूरा कर रहे हैं जो परमेश्वर ने कहा है।

पौलुस यह घोषित करता है कि परमेश्वर के मनुष्यों के साथ किए गए पूर्वकालीन व्यवहारों के अभिलेख 'हमारी चेतावनी के लिये लिखे गए हैं, जिन पर युगों का अन्त आ पहुँचा है।' दानिय्येल का इतिहास हमारी चेतावनी के लिये हमें दिया गया है। 'प्रभु का भेद उनके साथ है जो उसका भय मानते हैं।' दानिय्येल का परमेश्वर आज भी जीवित है और राज्य करता है। उसने अपने लोगों के लिये स्वर्ग के द्वार बन्द नहीं किए हैं। जैसे यहूदी युग में था, वैसे ही इस युग में भी, परमेश्वर अपने दास भविष्यद्वक्ताओं को अपने भेद प्रकट करता है।

प्रेरित पतरस कहते हैं: 'हमारे पास भविष्यवाणी का एक और भी अधिक दृढ़ वचन है; और तुम इस पर ध्यान देते हो तो अच्छा करते हो, जैसे अंधकारमय स्थान में चमकने वाले प्रकाश पर ध्यान दिया जाता है, जब तक कि दिन उदय न हो जाए और भोर का तारा तुम्हारे हृदयों में उदित न हो; यह पहले जान लो कि शास्त्र की कोई भी भविष्यवाणी किसी निजी व्याख्या पर आधारित नहीं है। क्योंकि भविष्यवाणी प्राचीनकाल में मनुष्य की इच्छा से नहीं आई; परन्तु परमेश्वर के पवित्र मनुष्यों ने, पवित्र आत्मा से प्रेरित होकर, वचन बोले।'

अविश्वासी और ईश्वरहीन लोग समय के उन चिन्हों के महत्त्व को नहीं परखते, जो भविष्यवाणी के वचन में पूर्व से बताए गए हैं। अज्ञानवश वे ईश्वर-प्रेरित अभिलेख को स्वीकार करने से इनकार कर सकते हैं। परन्तु जब मसीही कहलाने वाले महान "मैं हूँ" द्वारा अपने उद्देश्यों को प्रकट करने हेतु प्रयुक्त विधियों और साधनों के विषय में उपहासपूर्वक बोलते हैं, तब वे अपने को धर्मशास्त्र और परमेश्वर की सामर्थ दोनों से ही अनभिज्ञ सिद्ध करते हैं। सृष्टिकर्ता भली-भाँति जानता है कि मानव-स्वभाव में किन-किन तत्त्वों से उसे निपटना है। वह यह भी जानता है कि वांछित परिणाम प्राप्त करने के लिए किन साधनों का उपयोग करना है।

मनुष्य का वचन विफल पड़ता है। जो मनुष्यों के कथनों को अपना आश्रय बनाता है, उसका कांपना उचित है; क्योंकि वह किसी दिन जहाज़-नष्ट पीत के समान हो जाएगा। परमेश्वर का वचन अभांत है, और सदैव स्थिर रहता है। मसीह यह घोषित करते हैं, 'मैं तुम से सच कहता हूँ, जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाएँ, तब तक व्यवस्था से एक बिंदु या एक मात्रा भी किसी रीति से न टलेगा, जब तक सब कुछ पूरा न हो जाए।' परमेश्वर का वचन अनन्तता के अविच्छिन्न युगों भर स्थिर बना रहेगा। युथ इंस्ट्रक्टर, 1 दिसंबर, 1903.

परमेश्वर कभी नहीं बदलता, और वह उसी विधि से कार्य करता है, जैसा वह सदैव करता आया है।

पृथ्वी पर परमेश्वर का कार्य प्रत्येक महान सुधार या धार्मिक आंदोलन में युग से युग तक एक उल्लेखनीय समानता प्रस्तुत करता है। मनुष्यों के साथ परमेश्वर के व्यवहार के सिद्धांत सदैव समान रहे हैं। वर्तमान के महत्वपूर्ण आंदोलनों के अतीत में समानांतर मिलते हैं, और पूर्व युगों में कलीसिया के अनुभवों में हमारे समय के लिए अत्यंत मूल्यवान पाठ निहित हैं। महान विवाद, 343.

मलाकी के तीसरे अध्याय के प्रथम चार पद वाचा के दूत के लिए मार्ग तैयार करने वाले दूत की पहचान करते हैं, और लेवियों के शोधन तथा शुद्धिकरण को निरूपित करते हैं। तब प्रभु लाओदीकिया पर न्याय सुनाता है, यह दर्शाते हुए कि वे परमेश्वर का भय नहीं मानते, अर्थात् वे तीसरे स्वर्गदूत की आधारभूत "अल्फा" परीक्षा में असफल हुए हैं। उनका भय-रहित होना ज्ञान के उद्देश्यपूर्ण अस्वीकार का सूचक है, और जिस ज्ञान को वे अस्वीकार करते हैं, उसका संदर्भ मार्ग तैयार करने वाले दूत के इतिहास तथा उसके पश्चात् आने वाले दिव्य दूत के अंगीकार से है। सभी

भविष्यद्वक्ता अंतिम दिनों की ओर संकेत करते हैं, और यदि कोई वास्तविक न होता, तो किसी कूट-सुधारवादी आंदोलन की पहचान करने का कोई कारण भी न होता।

“परन्तु शैतान निष्क्रिय नहीं था। अब उसने वही करने का प्रयास किया जो उसने प्रत्येक अन्य सुधार-आन्दोलन में किया था—सच्चे कार्य के स्थान पर एक जाली वस्तु उन पर थोपकर लोगों को धोखा देना और नष्ट करना। जैसे मसीही कलीसिया की प्रथम शताब्दी में झूठे मसीह थे, वैसे ही सोलहवीं शताब्दी में झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े हुए।” —The Great Controversy, 186.

मलाकी के तीसरे अध्याय के पहले छह पदों का संदर्भ, एक लाख चवालीस हजार के सुधारवादी आंदोलन के लेवियों का परिशोधन और शुद्धिकरण है। प्यूचर फॉर अमेरिका या तो वही आंदोलन है, अथवा अनेक छद्म रूपों में से एक। तब मलाकी कहता है:

तुम्हारे पितरों के दिनों से ही तुम मेरे विधानों से भटक गए हो और उनका पालन नहीं किया है। मेरी ओर लौट आओ, और मैं भी तुम्हारी ओर लौट आऊँगा, सेनाओं का प्रभु कहता है। मलाकी 3:7.

चार पीढ़ियों में फैला क्रमशः बढ़ता हुआ विद्रोह ही योएल की पुस्तक की भूमिका और पृष्ठभूमि है, और मलाकी इसी क्रमशः बढ़ते विद्रोह को तब चिन्हित करता है, जब वह कहता है, “तुम अपने पितरों के दिनों से ही दूर चले गए हो।” 1863 से—जो विद्रोह की पहली पीढ़ी के पितरों के दिन थे—वे परमेश्वर से क्रमशः और अधिक दूर होते चले गए हैं। उनके निरंतर पाप के विरुद्ध उच्चारित घोषणा लाओदीकिया के उस आह्वान से संतुलित है, जो शोकपूर्ण स्वरों में यह प्रतिज्ञा करता है कि यदि वे मात्र लौट आएँ, तो परमेश्वर भी उनके पास लौट आएगा।

परन्तु तुम कहते हो, ‘हम किस प्रकार लौटें?’ क्या मनुष्य परमेश्वर को लूटेगा? तथापि तुमने मुझे लूटा है। फिर तुम कहते हो, ‘हमने तुझे किस बात में लूटा?’ दशमांश और भेंटों में। तुम शाप से शापित हो, क्योंकि तुमने मुझे लूटा है—हाँ, इस समस्त राष्ट्र ने।

समस्त दशमांश भंडारगृह में ले आओ, ताकि मेरे घर में भोजन हो; और अब इसी द्वारा मुझे परखो, सेनाओं के यहोवा कहते हैं, कि क्या मैं तुम्हारे लिये आकाश के झरोखे नहीं खोल दूँगा और तुम पर ऐसी आशीष उँडेलूँगा कि उसे समेटने के लिये पर्याप्त स्थान न रहेगा।

और मैं तुम्हारे लिये भक्षक को डाँटूँगा, और वह तुम्हारी भूमि के फल को नष्ट नहीं करेगा; और न तुम्हारी दाखलता खेत में अपना फल समय से पहले गिराएगी, यहोवा सेनाओं का यह वचन है। और सब जातियाँ तुम्हें धन्य कहेंगी, क्योंकि तुम रमणीय देश ठहरोगे, यहोवा सेनाओं का यह वचन है। मलाकी 3:5-12.

2024 की अल्फा आधारभूत बाह्य परीक्षा के पश्चात् 2026 की शिरोशिला-स्वरूप आन्तरिक परीक्षा होती है। वह शिरोशिला-स्वरूप परीक्षा तब घटित होती है जब आकाश के झरोखे खोले जाते हैं, और विजयी कलीसिया के परिप्रेक्ष्य में उन खुले झरोखों की पहचान तीन सन्दर्भों में की गई है—मलाकी तीन, मिलर का स्वप्न और प्रकाशितवाक्य उन्नीस। मलाकी अल्फा है, मिलर का स्वप्न मध्य है, और प्रकाशितवाक्य ओमेगा है। यह परीक्षा मसीह के द्वारा, ‘धूल-ब्रश लिए हुए मनुष्य’ के रूप में, रत्नों को सन्दूक में डालते हुए, चित्रित की गई है। वे रत्न, एक साथ, अपने क्रम में पूर्णतः सुव्यवस्थित सत्य भी हैं, और अवशिष्ट जन भी। भण्डारगृह वह स्थान है जहाँ ‘भोजन’ एकत्र किया और वितरित किया जाता है। मन्ना की परीक्षा, कफरनहूम की परीक्षा और स्वर्ग की रोटी की भाँति—‘भोजन’ ही विषय है।

कुँवारियों के दृष्टान्त में “मांस” तेल है, और वह चरित्र, पवित्र आत्मा तथा वह भविष्यद्व्यापीय संदेश का प्रतीक है जो मसीह का चरित्र विकसित करने वालों के हृदयों और मनो में पवित्र आत्मा को प्रविष्ट कराता है। “मांस” योएल का “नया दाखरस” है, जो इफ्राइम के मद्यपों से वंचित कर दिया गया है। दूसरे दूत की आंतरिक शीर्ष-शिला-मंदिर परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए आपको बाह्य प्रथम “अल्फा” आधारभूत परीक्षा उत्तीर्ण की हुई होनी चाहिए। यदि आपने आधार को स्वीकार नहीं किया है, तो आप उस मंदिर का भाग नहीं हो सकते जो उसी आधार पर खड़ा किया गया है;

परन्तु यदि आप उन लोगों की गणना में नहीं हैं जिन्होंने उस आधारभूत परीक्षा को उत्तीर्ण किया है, तो आप अपना कृत्रिम आध्यात्मिक गृह बालू पर बनाएँगे। यूहन्ना उस कृत्रिम आध्यात्मिक गृह को "शैतान की सभा" कहता है और यिर्मयाह उसे "ठट्टा करने वालों की मण्डली"।

'सब दशमांश और भेंटें भण्डारगृह में ले आओ'—यही वह आंतरिक परीक्षा है जहाँ मुहर अंकित की जाती है। धूल-झाड़ने वाले पुरुष ने परमेश्वर के शेष जनों को विस्तृत संदूक में डाल दिया, और ऐसा करते हुए वह समस्त दशमांश को भण्डारगृह में लाने के कार्य का चित्रण कर रहा था। जब वह स्वर्ग के झरोखों से आशीष उंडेलता है, तब लेवीय वही 'उठाई हुई भेंट' होते हैं। धूल-झाड़ने वाले पुरुष के रत्न उसके शेष जन ही हैं, और यशायाह के छठे अध्याय में वे शेष जन 'दशमांश' के रूप में पहचाने गए हैं।

तब मैंने कहा, हे प्रभु, कब तक? और उसने कहा, जब तक नगर उजाड़ होकर बिना निवासी न हो जाएँ, और घरों में कोई मनुष्य न रहे, और भूमि सर्वथा उजाड़ न हो जाए; और यहोवा मनुष्यों को दूर-दूर तक हटा दे, और देश के बीच में बड़ा परित्याग हो। तौभी उसमें एक दशमांश रहेगा, और वह लौटेगा, पर वह नाश किया जाएगा; जैसे तेरेबिन का पेड़ और बलूत, जिनमें अपने पत्ते गिराने पर भी ठूँठ बना रहता है; वैसे ही उसका ठूँठ पवित्र बीज होगा। यशायाह 6:11-13.

प्रभु अनेक साक्षियों की गवाही पर यह ठहराते हैं कि 'कब तक' का प्रश्न रविवार के कानून की ओर संकेत करता है, और यशायाह अध्याय छह की तीसरी आयत में स्वर्गदूत यह उद्घोषणा करते हैं, 'पवित्र, पवित्र, पवित्र है सेनाओं का यहोवा; सारी पृथ्वी उसकी महिमा से परिपूर्ण है।' सिस्टर वाइट इसे प्रकाशितवाक्य अध्याय अठारह के पराक्रमी स्वर्गदूत से संबद्ध करती हैं।

जैसे वे [स्वर्गदूत] भविष्य को देखते हैं, जब समस्त पृथ्वी उसकी महिमा से भर जाएगी, तो विजयी स्तुति-गीत मधुर गान में एक से दूसरे तक प्रतिध्वनित होता है: 'पवित्र, पवित्र, पवित्र, सेनाओं का प्रभु है।' वे परमेश्वर की महिमा करने में पूर्णतः संतुष्ट हैं; और उसकी उपस्थिति में, उसकी स्वीकृति की मुस्कान के तले, उन्हें इससे बढ़कर कुछ भी नहीं चाहिए। उसकी छवि को धारण करने में, उसकी सेवा करने और उसकी आराधना करने में, उनकी सर्वोच्च आकांक्षा पूर्णतः पूरी हो जाती है। रिव्यू एंड हेराल्ड, 22 दिसंबर, 1896.

यशायाह का छठा अध्याय 9/11 को चिन्हित करता है—जब पृथ्वी प्रकाशितवाक्य अठारह की दो वाणियों में से पहली वाणी की महिमा से आलोकित हुई थी। जब यशायाह ने "कब तक" पूछा, तब इस अध्याय का इतिहास 9/11 से लेकर रविवार के कानून तक की अवधि के रूप में चिन्हित किया जाता है, जहाँ दूसरी वाणी का आगमन होता है। यशायाह हमें सूचित करता है कि रविवार के कानून के समय एक अवशेष होगा—जो दशमांश है। उस अवशेष के भीतर पदार्थ है—उसके पात्रों में तेल है।

तथापि उसमें दसवाँ भाग [दशमांश] रहेगा, और वह लौटेगा, और भक्षण किया जाएगा: जैसे तेरेबिन्थ का वृक्ष, और जैसे बलूत का वृक्ष, जिनमें, जब वे अपनी पत्तियाँ झाड़ते हैं, तब भी उनका मूल रहता है: वैसे ही पवित्र वंश उसका मूल होगा। यशायाह 6:13.

"दशमांश" वे हैं, जिन्होंने मलाकी और यिर्मयाह, दोनों, के लौट आने के आह्वान के प्रत्युत्तर में "लौट" आए हैं। वे मानवता के वृक्ष हैं, जो देवत्व (पवित्र बीज) के साथ संयुक्त हैं। उन्हें खाया जाएगा, क्योंकि वे केवल दूत ही नहीं, वरन् पेंटेकोस्ट की हिलाई जाने वाली रोटियों का संकेत-ध्वज भी हैं; वे वह संदेश हैं जिसे अन्यायिता लोग खाएँगे।

इस कारण यहोवा यों कहता है, यदि तू लौट आए, तो मैं तुझे फिर लौटा लाऊँगा, और तू मेरे सम्मुख खड़ा रहेगा; और यदि तू तुच्छ में से बहुमूल्य को अलग निकाले, तो तू मेरे मुख के समान होगा; वे तेरी ओर लौटें, परन्तु तू उनकी ओर न लौटना। यिर्मयाह 15:19।

यिर्मयाह उन लोगों का प्रतिनिधित्व करता है जिन्होंने स्वर्गदूत के हाथ में जो संदेश था, उसे खाया, जो 'अल्फ़ा' और आधारभूत परीक्षा था, जिसका प्रतिनिधित्व 11 अगस्त, 1840, 1888, और 9/11 द्वारा किया गया था, क्योंकि वह

कहता है कि उसने वचन पाए और उन्हें खा लिया।

तेरे वचन मिले, और मैंने उन्हें खा लिया; और तेरा वचन मेरे हृदय के आनन्द और हर्ष का कारण हुआ; क्योंकि मैं तेरे नाम से कहलाता हूँ, हे सेनाओं के यहोवा परमेश्वर। यिर्मयाह 15:16.

यिर्मयाह ने जब स्वर्गदूत के हाथ में छोटी पुस्तक को खा लिया, तब वह परमेश्वर के नाम से कहलाया; और उस संदेश ने लज्जा के विपरीत आनन्द और हर्ष उत्पन्न किया। जब परमेश्वर का नाम यिर्मयाह को दिया जाता है, तब वह उन एक लाख चवालीस हज़ार का प्रतिनिधित्व करता है जो फिलाडेल्फियाई हैं।

जो जय पाएगा, उसे मैं अपने परमेश्वर के मन्दिर में एक स्तम्भ बनाऊँगा, और वह फिर कभी बाहर न जाएगा; और मैं उस पर अपने परमेश्वर का नाम, और अपने परमेश्वर के नगर का नाम, अर्थात् नया यरूशलेम, जो मेरे परमेश्वर की ओर से स्वर्ग से उतरता है, लिखूँगा; और मैं उस पर अपना नया नाम लिखूँगा। प्रकाशितवाक्य 3:12.

यिर्मयाह ने 9/11 के संदेश को खा लिया और 18 जुलाई, 2020 की निराशा को सहा।

मैं ठट्ठा करने वालों की सभा में नहीं बैठा, न मैं आनन्दित हुआ; तेरे हाथ के कारण मैं अकेला बैठा रहा, क्योंकि तूने मुझे रोष से भर दिया। मेरी पीड़ा निरन्तर क्यों है, और मेरा घाव असाध्य क्यों है, जो चंगा होने से इन्कार करता है? क्या तू मेरे लिये सर्वथा झूठे के समान होगा, और ऐसे जल के समान जो धोखा देते हैं? यिर्मयाह 15:17, 18.

यिर्मयाह की "ठट्ठा करने वालों की सभा" वही है जिसे फिलाडेल्फिया और स्मिर्ना "शैतान की सभा" कहते हैं, जो कहते हैं कि वे यहूदी हैं, परन्तु हैं नहीं। यिर्मयाह आनन्दित नहीं हुआ, क्योंकि जिस संदेश का उसने प्रचार किया था वह असत्य संदेश था, जो आनन्द नहीं, वरन् केवल लज्जा उत्पन्न करता था। यिर्मयाह का "ऐसा निरन्तर घाव जो चंगा होने से इन्कार करता था" वही साढ़े तीन दिन थे, जिनमें ठट्ठा करने वालों की सभा आनन्दित हुई, जबकि यिर्मयाह, मूसा और एलिय्याह उस सड़क पर मृत पड़े थे जो मरी हुई सूखी हड्डियों की घाटी से होकर गुजरती थी। उस संदेह और अनिश्चितता की अवधि के बीच प्रभु ने यिर्मयाह से लौट आने को कहा।

इस कारण यहोवा यूँ कहता है: यदि तू लौट आए, तो मैं तुझे फिर से ले आऊँगा, और तू मेरे सामने ठहरेगा; और यदि तू निकृष्ट में से उत्तम को अलग करे, तो तू मेरे मुख के समान होगा; वे तेरे पास लौटें, परन्तु तू उनके पास न लौटना। और मैं तुझे इस प्रजा के लिये एक दृढ़ पीतल की दीवार बना दूँगा; वे तेरे विरुद्ध लड़ेंगे, परन्तु तेरे ऊपर प्रबल न होंगे; क्योंकि मैं तुझे बचाने और छुड़ाने के लिये तेरे साथ हूँ, यहोवा की यह वाणी है। और मैं तुझे दुष्टों के हाथ से छुड़ाऊँगा, और क्रूरों के हाथ से तुझे छुड़ा लूँगा। यिर्मयाह 15:19-21.

यदि यिर्मयाह लौट आए, तो परमेश्वर उसे एक सेना बना देगा, जिसका रूपक पीतल की दीवार के रूप में किया गया है, जिसके विरुद्ध 'दुष्ट' और 'भयंकर' दोनों युद्ध करेंगे, परन्तु प्रबल न होंगे। यह श्वेत अश्वों की वह सेना है, जिन पर अश्वारोही श्वेत सन-वर्दियों में सुसज्जित हैं। वही सेना—अथवा वह पीतल की दीवार—यिर्मयाह के लौटने पर तब खड़ी की जाती है, जब और यदि वह बहुमूल्य को निकृष्ट से अलग करता है। यहजेकेल अध्याय सैंतीस में, वह सेना—जिसे बहन व्हाइट परमेश्वर की शेष प्रजा कहती हैं—उनके लौट आने पर खड़ी होती है। शेषजन लौटते हैं, और जब वे बहुमूल्य को निकृष्ट से अलग करते हैं, तब वे एक पराक्रमी सेना के रूप में खड़े होते हैं, और तब वे परमेश्वर का मुख बन जाते हैं। उन्हें सत्य के वचन को ठीक रीति से विभाजित करना है, गेहूँ से भूसी को अलग करते हुए; क्योंकि वे उन्हीं नियमों का प्रयोग कर रहे हैं जिन्हें उनके पिता ने अपनाया था, जो एक पिसाई करने वाले थे और सर्वोत्कृष्ट रोटी तैयार करने में निपुण थे। यदि वे बहुमूल्य को निकृष्ट से—सत्य को त्रुटि से—अलग करें, तो वे परमेश्वर के पहरेदार होंगे, जब परमेश्वर दुष्टों और बुद्धिमानों को अलग करेगा।

2023 में यिर्मयाह ने लौट आने के आह्वान का प्रत्युत्तर दिया; फिर 2024 में वह निराश हुआ, क्योंकि रोम द्वारा दर्शन की स्थापना की आधारभूत परीक्षा पर एक बड़ा समूह अलग हो गया। यिर्मयाह ने बहुमूल्य को घृणित से, सत्य को भ्रान्ति से, उचित रीति से पृथक किया, और स्वर्ग की खिड़कियाँ खुलने के समय की आन्तरिक ओमेगा परीक्षा तक दृढ़

बना रहा। जब स्वर्ग खोल दिए जाते हैं, तब विजयी कलीसिया अपने को तैयार कर चुकी होती है। वह आधारभूत बाह्य अल्फा परीक्षा उत्तीर्ण कर चुकी होती है, तत्पश्चात वह स्वर्ग की खिड़कियों से सम्बद्ध आन्तरिक ओमेगा परीक्षा भी उत्तीर्ण करती है। या तो वह उत्तीर्ण होकर परमेश्वर की सेना का भाग बनती है, नहीं तो वह वायु से खिड़कियों से बाहर उड़ा दी जाती है। उसे एक विस्तृत मैदान में बाहर फेंक दिया जाता है, जैसा कि यशायाह बाईस में शोबना के साथ हुआ; अथवा उसे पेटिका में डाल दिया जाता है। या तो उसे पेटिका में डाला जाता है, अथवा उसे मन्दिर से बाहर निकाला जाता है, जैसे नहेम्याह ने तोबियाह को बाहर निकाला था, या जैसे मसीह ने मुद्रा-विनिमय करनेवालों को बाहर निकाला था। जब धूल-झाड़ने वाला व्यक्ति रत्नों को पेटिका में डालता है, तो वह पेटिका या तो सत्य की नयी रूपरेखा में परमेश्वर का वचन होती है, अथवा वह पेटिका परमेश्वर का मन्दिर होती है; और ये दोनों ही मसीह के प्रतीक हैं, और मसीह को विभाजित नहीं किया जाना है।

क्या मसीह विभाजित है? क्या पौलुस तुम्हारे लिए क्रूस पर चढ़ाया गया था? या क्या तुम पौलुस के नाम में बपतिस्मा लिए गए थे? 1 कुरिन्थियों 1:13।

मसीह पौलुस से पृथक नहीं हैं। देवत्व पौलुस की मानवता से पृथक नहीं था। जब मनुष्य के रूप में पौलुस ने देवत्व के नाम से बपतिस्मा दिया, तब कोई विभाजन नहीं था, क्योंकि मानव दूत दैवीय संदेश के साथ संयुक्त है। पौलुस उतनी ही निश्चयता से देवत्व से संयुक्त था, जितनी निश्चयता से एफ्रेम अपनी मूर्तियों से संयुक्त था।

मिलर के स्वप्न में जो लोग मंदिर (पेटिका) में डाले जाते हैं, वे मलाकी तीन के वे दशमांश हैं जिन्हें भण्डार-गृह में लाया जाना है, जहाँ भोजन संग्रहीत और वितरित होता है। वह भण्डार-गृह एक लाख चवालीस हजार का मंदिर है, अथवा जैसा पतरस ने कहा, "एक आत्मिक गृह, एक पवित्र याजकत्व।" पेटिका वही आत्मिक गृह है और रत्न याजकत्व हैं। इसी कारण मिलर का स्वप्न पृष्ठ "81" पर अभिलेखित है, जो दिव्य महायाजक के साथ अस्सी मानवीय याजकों के संयुक्त होने का प्रतीक है।

मिलर के स्वप्न में धूल-झाड़ने वाला मनुष्य रत्नों को लाने का निरूपण करता है, (जो यशायाह के दशमांश और मलाकी के अर्पण हैं), जब वह रत्नों को मन्दिर में निक्षेप करता है, जो भण्डारगृह है, जो पेटिका है। प्रायः दूसरा स्वर्गदूत दो प्रश्नों के साथ सम्बद्ध होता है, और ओमेगा-परीक्षा, अल्फा-परीक्षा तथा तीसरे लिटमस परीक्षण के संदर्भ में, दूसरा स्वर्गदूत ही है। आह्वान लौटने का है, और लौटना इस प्रकार प्रदर्शित होता है कि सब दशमांश और अर्पण भण्डारगृह में लाए जाएँ, ताकि उसके भवन में आहार हो। यहाँ दो प्रश्न हैं: "आहार" क्या है? और "भण्डारगृह" क्या है?

रत्न दूत हैं या रत्न संदेश हैं—इसी से यह निर्धारित होता है कि उन दो प्रश्नों के उत्तर कैसे दिए जाएँगे। यदि वे दूत हैं, तो वे वही दशमांश हैं जिससे मन्दिर का निर्माण होता है, जो सदैव दूसरे चरण में स्थापित किया जाता है। यदि रत्न संदेश हैं, तो वह अर्धरात्रि की पुकार का संदेश है, जिसे मन्दिर की शिरोशिला के रूप में और दूसरे स्वर्गदूत के संदेश के सामर्थ्य-प्रदान के रूप में परिपूर्णता तक पहुँचाया जाता है।

और कहा, इसी कारण मनुष्य अपने पिता और माता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा; और वे दोनों एक देह होंगे? अतः वे अब दो नहीं, परन्तु एक देह हैं। अतः जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे मनुष्य अलग न करे। मत्ती 19:5, 6.

हम इस अध्ययन को अगले लेख में जारी रखेंगे।

मेरा ध्यान मसीह के प्रथम आगमन की घोषणा की ओर फिर से दिलाया गया। यूहन्ना को एलिय्याह की आत्मा और सामर्थ्य में यीशु का मार्ग तैयार करने के लिए भेजा गया था। यूहन्ना की गवाही को अस्वीकार करने वालों को यीशु की शिक्षाओं से कोई लाभ नहीं हुआ। उसके आने की भविष्यसूचना देने वाले संदेश के प्रति उनके विरोध ने उन्हें ऐसी स्थिति में ला दिया जहाँ वे यह कि वह मसीहा है, इस बात के सबसे सशक्त प्रमाणों को भी आसानी से ग्रहण नहीं कर सके। शैतान ने यूहन्ना के संदेश को अस्वीकार करने वालों को और आगे बढ़ाया कि वे मसीह को भी अस्वीकार करें और उसे क्रूस पर चढ़ाएँ। ऐसा करके उन्होंने अपने आप को ऐसी दशा में डाल लिया जहाँ वे

पिन्तेकुस्त के दिन मिलने वाली उस आशीष को प्राप्त न कर सके, जो उन्हें स्वर्गीय पवित्रस्थान में प्रवेश का मार्ग सिखाती। मन्दिर का परदा फट जाना यह दिखाता था कि यहूदी बलिदान और नियम-विधियाँ अब स्वीकार नहीं किए जाएँगी। महान बलिदान चढ़ाया जा चुका था और स्वीकार भी कर लिया गया था, और पवित्र आत्मा, जो पिन्तेकुस्त के दिन उतरा, शिष्यों के मनो को पृथ्वीस्थ पवित्रस्थान से स्वर्गीय पवित्रस्थान की ओर ले गया, जहाँ यीशु अपने ही लहू के द्वारा प्रवेश कर चुका था, ताकि अपने शिष्यों पर अपने प्रायश्चित्त के लाभ उंडेल दे। परन्तु यहूदी पूर्ण अंधकार में छोड़ दिए गए। उद्धार की योजना के विषय में जो प्रकाश उन्हें मिल सकता था, वह सब उन्होंने खो दिया, और फिर भी वे अपने निरर्थक बलिदानों और भेंटों पर भरोसा करते रहे। स्वर्गीय पवित्रस्थान ने पृथ्वीस्थ की जगह ले ली थी, फिर भी उन्हें इस परिवर्तन का ज्ञान न था। अतः वे पवित्र स्थान में मसीह की मध्यस्थता से लाभान्वित नहीं हो सके।

बहुत से लोग इस भय के साथ यहूदियों के मार्ग को देखते हैं कि उन्होंने मसीह को अस्वीकार किया और क्रूस पर चढ़ाया; और जब वे उसके लज्जाजनक दुर्व्यवहार का इतिहास पढ़ते हैं, तो वे सोचते हैं कि वे उससे प्रेम करते हैं, और न तो पतरस की तरह उसे नकारते और न ही यहूदियों की तरह उसे क्रूस पर चढ़ाते। परन्तु परमेश्वर, जो सबके हृदयों को पढ़ता है, ने उस प्रेम की परीक्षा ली जो वे यीशु के प्रति अनुभव करने का दावा करते थे। समस्त स्वर्ग ने पहले स्वर्गदूत के संदेश के स्वीकार किए जाने को अत्यन्त गहन रुचि से देखा। परन्तु बहुतों ने, जो यीशु से प्रेम करने का दावा करते थे और जो क्रूस की कहानी पढ़ते समय आँसू बहाते थे, उसके आगमन के शुभ समाचार का उपहास किया। संदेश को आनन्द के साथ ग्रहण करने के बजाय उन्होंने उसे भ्रम घोषित किया। उन्होंने उन लोगों से घृणा की जो उसके प्रगटन से प्रेम करते थे और उन्हें कलीसियाओं से बाहर कर दिया। जिन्होंने पहले संदेश को अस्वीकार किया, वे दूसरे से लाभान्वित नहीं हो सके; और न ही वे आधी रात की पुकार से लाभान्वित हुए, जो उन्हें विश्वास के द्वारा यीशु के साथ स्वर्गीय पवित्रस्थान के अत्यन्त पवित्र स्थान में प्रवेश करने के लिए तैयार करने वाली थी। और पहले दो संदेशों को अस्वीकार करके उन्होंने अपनी समझ को इतना अन्धकारमय कर दिया है कि वे तीसरे स्वर्गदूत के संदेश में कोई प्रकाश नहीं देख सकते, जो अत्यन्त पवित्र स्थान में जाने का मार्ग दिखाता है। मैंने देखा कि जैसे यहूदियों ने यीशु को क्रूस पर चढ़ाया, वैसे ही नामधारी कलीसियाओं ने इन संदेशों को क्रूस पर चढ़ा दिया है; इसलिए उन्हें अत्यन्त पवित्र स्थान में जाने के मार्ग का कोई ज्ञान नहीं है, और वे वहाँ यीशु की मध्यस्थता से लाभान्वित नहीं हो सकते। यहूदियों के समान, जो अपने निष्फल बलिदान चढ़ाते थे, वे उस कक्ष की ओर अपनी निष्फल प्रार्थनाएँ चढ़ाते हैं जिसे यीशु छोड़ चुका है; और शैतान, इस धोखे से प्रसन्न होकर, धार्मिक रूप धारण करता है, और इन कथित मसीहियों के मनो को अपनी ओर ले जाता है, अपनी शक्ति, अपने चिन्हों और झूठे चमत्कारों के साथ काम करते हुए, ताकि उन्हें अपने फन्दे में जकड़ दे। प्रारम्भिक लेखन, 259-261.